

PHILOSOPHY

वस्तु शुद्ध सात है यह कल्पना याज्ञ है जैसे शुद्ध, आकाश

iv) मिथ्या :- मिथ्या सात का अभाव भागी जाती है वरुण
वशा शुभ पुल्यान होत है और उलक चाल
जायत और स्वपन अवस्थाओं के अभाव विविध
धे पाते है। इस अवस्था को सुसुप्ति कहते है।

v) स्मृति :- अविद्य अज्ञानों की यथावत भाग्यिक प्रकृ
प्रतीति स्मृति है। स्मृति संज्ञा जन्म सात
है।

वैद्य
शा

इस पाँच वृत्तियों के अन्तर्गत संज्ञा जन्म सात है
पुल्प जन्म बुद्धि में प्रकाशित अपने प्रमिषिबन से तादात्म्य
कर लेता है तो वह बद्ध जीव के रूप में प्रतीत होता है। जो
जन्म-मरण चक्र में सस्य संसलन करता है तथा नाग उच्छा
के कलेश भागत है। कर्मों से कलेश और कलेशों से कर्म
उत्पन्न होते रहते है।

कलेश पाँच प्रकार के है -

- i) अविद्या ii) स्मिता iii) राग iv) द्वेष v) अक्रियवश

अविद्या - मित्य, अधुर्ता, दुःख तथा अनालन मे मित्य, सूची
सुख और मालन बुद्धि रहन अविद्या है।

ii) स्मिता - यह विपर्यय या मिथ्या सात है। पुल्प अधित
मितात भी है। दुर्गों को एक भाग लेन समित है
यह अहंकार - ममकार है। उषी से मोस्त - मोय - मोग की
भावना होती है।

iii) राग - विषय सुखों की तृष्णा या आसक्ति राग है।

iv) दूष - सुख के अवरोधक दुःख और दुःख के उत्पादक के प्रति क्रोध एवं द्वेष का भाव है उसे दूष कहते हैं।

v) अभिवेक - पुरुषों के प्राणी में जीवन में आसक्ति और मूल्य का अर्थ स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहता है इसके अभिवेक कहते हैं। अविद्या की निवृत्ति तथा चित्त वृत्ति निरोध के द्वारा इन चले शो लवे कर्मों से मुक्ति मिल सकती है, योग सभी चित्त वृत्ति निरोध का पर्याय है।

चित्त की पाँच प्रकिया या अवस्थाएँ होती हैं-

- i) कंक्षित (ii) मूढ (iii) विक्षिप्त (iv) ललायत (v) निरुद्ध

i) निद्र - निद्र चित्त में स्वप्न दुःख का आधिक्य होता है जिससे वह अस्थिर, चंचल, विषयोन्मुख बनकर सुख दुःख भोगता है तथा तुलान में भी गलत के समान दालायमान रहता है।

ii) मूढ - स्वप्नो तथा दुःख का आधिक्य होता है जिससे वह विवेकशून्य, कतल्य, कर्तव्यवाक्य रहित बनकर प्रमाद, आलस्य निद्रा में पड़ जाता है या विवेकी कार्यों में परित्यक्त होता है।

iii) विक्षिप्त - विक्षिप्त चित्त में लल्लु दुःख की अधिकता रहती है चित्त कभी-कभी रणोदुःख भी जाँट आता है। विक्षिप्त का अर्थ विरोध रूप से निद्रा अर्थात् अधिक निद्र गयी है अतः निद्र से उत्तम है अतः राजस निद्र चित्त से स्वाविक विक्षिप्त चित्त उत्तम है क्योंकि इसके द्वारा लल्लु दुःख के

साल कभी-कभी स्थिरता आ जाती है जबकि राजलक्षित
वित्त सदा लचकल रहता है।

(iv) एकाग्र — चित्त की चौथी अवस्था में चित्त एकाग्र
रहता है यहाँ लक्ष्य का अत्यंत उत्कर्ष
रहता है तथा स्वानुभूति और तपो भूत सब सब
चित्त बाह्य वस्तुओं से रहित होकर व्यक्तित्व पर एकाग्र
रहता है।

v) निरुद्ध — चित्त की पाँचवीं और अंतिम अर्थात् चित्त
निरुद्ध कहलाता है यहाँ वस्तुओं को कुछ मत
वक्त विरोध हो जाता है किन्तु उनके संस्कार बने रहते हैं।
प्रत्येक सारी वस्तुओं और सारे संस्कारों का सर्वथा विरोध
होकर अविद्या की कमिष्टि हो जाती है तो चित्त निरुद्ध
होकर अविद्या में विहित हो जाता है यह योग की
अवस्था है।

इन पाँच चित्त अवस्थाओं में प्रथम तीन योग
के लिए सर्वथा अनुपयुक्त है जबकि अंतिम दो अवस्थाएँ
एकाग्र और निरुद्ध समाधी के लिए उपयोगी हैं।

State
23/7

योग शरीर इन्द्रिया और चित्त की शुद्धि
के लिए आठ अंगों का वर्णन करता है।

- i) यम — ~~असंयम~~ यह पाँच प्रकृतियों का संयम है।
 - (i) अहिंसा → अर्थात् मन वचन और कर्म से
किसी प्राणी की हिला न करना
 - ii) सत्य → मन, वचन और कर्म से सत्य का पालन करना
 - iii) अस्तय → अर्थात् मन वचन और कर्म से किसी अन्य